SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

eSfFkyh'kj.k xqIr dh ukVî jpukvksa dk losZ{k.k

lat; dqekj flag (Ph.D.), राजभाषा विभाग,
भारतीय स्टेट बैंक, स्थानीय प्रधान कार्यालय, पटना, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
lat; dqekj flag (Ph.D.),
राजभाषा विभाग,
भारतीय स्टेट बैंक, स्थानीय प्रधान कार्यालय,
पटना, बिहार, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 01/12/2022
Revised on : -----
Accepted on : 08/12/2022
Plagiarism : 00% on 01/12/2022

'kks/k lkj

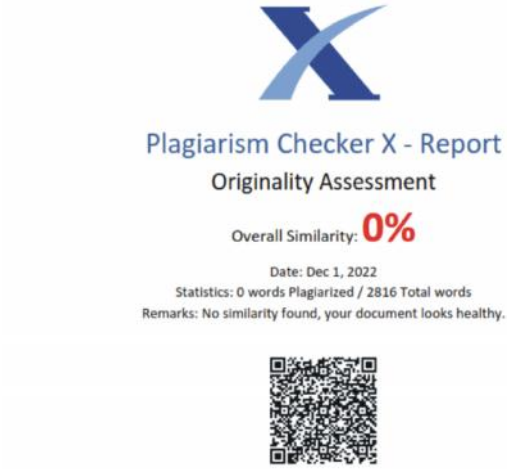

नाटक के तत्वों की कसौटी पर मैथिली शरण गुप्त के नाटक सशक्त न होते हुए भी महत्वपूर्ण हैं, कथ्य की दृष्टि से। हिंदी में नाटक लिखने की परंपरा का बीजारोपण जो भारतेन्दु युग में हुआ था, गुप्त जी ने अपने नाटकों के माध्यम से उसे आगे बढ़ाने में अपना अवदान दिया है। वस्तुतः गुप्त जी ने राष्ट्रीयता, भारतीय संस्कार, युगीन समस्या आदि को अपने पाठकों तक पहुंचाने के लिए नाटक लिखा। नाटककार के रूप में गुप्त जी को प्रसिद्धि भले ही नहीं मिली हो, परंतु कथ्य को सामने रखने के अपने उद्देश्य में ये सफल रहे हैं। मूलतः गुप्त जी कवि थे और उनका कवि व्यक्तित्व उनके नाटकों पर प्रभावी रहा है। हालांकि, डॉ नगेन्द्र ने गुप्त जी के नाटकों में गीति तत्व अति क्षीण देखा है अतः पूरी तरह से सफल गीति नाट्य की श्रेणी में भी गुप्त जी के नाटकों को आँख मूदकर नहीं रखा जा सकता है। बावजूद इनके हिंदी नाटकों के विकास में गुप्त जी के अवदान को नकारा नहीं जा सकता है। प्रस्तुत पत्र में गुप्त जी की नाट्य रचनाओं का एक सर्वेक्षण चित्रित करने का प्रयास है।

eq[; 'kCn

eSfFkyh 'kj.k xqIr] ys[ku] ukV~; jpuk] fganh-

मैथिली शरण गुप्त 1905 ई. में 'सरस्वती' के माध्यम से वे हिंदी जगत में लेखक के रूप में उपस्थित हुए। 'सरस्वती' ने गुप्त जी को द्विवेदी युग के एक प्रतिनिधि लेखक के रूप में उपस्थित किया। गुप्तजी ने अपने काव्य में नैतिकता और आदर्श को प्रस्तुत किया। गुप्त जी की 'हेमंत' शीर्षक कविता पहली बार 'सरस्वती' में प्रकाशित हुई। नाटक के क्षेत्र में उन्होंने पहला कदम 1914 ई. में रखा। 1914 ई. में उनके द्वारा लिखित 'उद्धार' नाटक का विवरण मिलता है, किंतु यह नाटक उपलब्ध नहीं है। यह

अप्रकाशित नाटक महाराणा प्रताप से संबद्ध है। इस प्रकार इस पहली नाट्य रचना के द्वारा ही उनकी राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति हुई है।

इस नाटक के पूर्व गुप्त जी 'रंग में भंग', 'जयद्रथ वध' और 'भारत भारती' जैसी कृतियों की रचना कर चुके थे और हिंदी जगत में ख्यात हो चुके थे। गुप्त जी का दूसरा नाटक 'तिलोत्तमा' है जो 1915 ई. में प्रकाशित हुआ था। यह नाटक पौराणिक आख्यान पर आश्रित है और इसमें दैत्यों के राजा सुंद और उसके अनुज उपसुंद के पराजय की कथा है। नाटक में मुख्य पुरुष पात्र देवताओं के राजा इंद्र और देव सेनापति कुमार हैं जबकि स्त्रियों में इंद्राणी और रति के अतिरिक्त मेनका, रंभा और उर्वशी के साथ एक नई अप्सरा तिलोत्तमा की उपस्थिति है। नाटक के प्रारंभ में गुप्त जी ने परंपरागत प्रस्तावना को रखा है जिसमें नान्दी, सूत्रधार और पारिपार्श्विक उपस्थित हैं। सूत्रधार गुप्त जी की काव्य–कला की प्रशंसा करते हुए कहता है:

"क्यों नहीं, उपस्थित सज्जनों का एक और कारण से भी उसमें स्वाभाविक अनुराग होगा, क्योंकि तिलोत्तमा गुप्त जी की नई रचना है और सरस्वती के उपासक सहृदयजन उनकी रचनाओं को पहले ही विशेष रूप से अपना चुके हैं:

सुंदर भाव देख सब कोई उसको अपना लेता है;
पर संबंध विशेष ह्रदय को और अधिक सुख देता है।
देख वसन्त–विकास विहंगम गाते हैं, सुख पाते हैं;
किंतु विटप उसको विलोक कर फूले नहीं समाते हैं।।

पाँच अंक के इस नाटक के पाँचवें अंक में तिलोत्तमा का प्रवेश होता है। वह सौंदर्य के प्रति आसक्त है:

"(आप ही आप) मैं पहुँची तो ठीक समय पर। इधर वसन्त का विकास भी हो गया। विन्ध्याचल ने भी नया रूप– रंग धारण किया है। अहा! कैसा अपूर्व सृष्टि–सौंदर्य है..... सब बातें अनुकूल हैं। बस, अब उन दोनों दानवों के इधर आने का ही विलंब है। आज मैं दिखला दूँगी कि:

सब यत्न विफल हो गए जहाँ– मैं हुई पूर्ण कृतकार्य्य वहाँ।
देखें अबला–बल आज सभी, उसको कुछ दुष्कर नहीं कभी।।

तिलोत्तमा सुंद–उपसुंद को देखती है और देवताओं को लगातार भयभीत करने वाले इन दोनों राक्षसों को अपने रूप जाल में फंसा कर उनमें द्वंद–युद्ध करवा देती है। इस संदर्भ में गुप्त जी की यह संवाद–योजना द्रष्टव्य है:

fr ykÙkek% अपने आत्मीयों की दुर्दशा देखकर मुझे विश्वास हो गया है कि संसार में शक्ति ही सब कुछ है। मैं अबला ठहरी। इसलिए मैंने प्रतिज्ञा की है कि जो सबसे अधिक शक्तिशाली पुरुष होगा, उसी को यह वर–माला पहनाकर मैं अपना पति बनाऊंगी। (माला दिखाती है)

l un% तो मुझसे अधिक शक्तिशाली और कौन हो सकता है? मैं सुंद हूँ। मैंने युद्ध में इंद्र को भी पराजित किया है!

mi l un% हे सुंदरी! तुम बिना कुछ विचार किए ही यह माला मुझको पहना दो। मेरा नाम उपसुंद है। इंद्र की तो बात ही क्या, उपेंद्र को भी मैं कुछ नहीं समझता।

fr ykÙkek% हे वीरो! तुम दोनों ही प्रसिद्ध बली हो। मैं कैसे समझूँ कि तुम दोनों में से किसमें विशेषता है।

l un% (हाथ पकड़कर) मैं ज्येष्ठ हूँ अतएव तुम मेरी हो।

mi l un% (दूसरा हाथ पकड़कर) ज्येष्ठ होने से ही कोई श्रेष्ठ नहीं हो सकता। अवस्था में बड़ा होना तो दैवाधीन है, गुणों में बड़ा होना ही सच्चा बड़प्पन है। इस विचार से तुम मेरी हो। (दोनों अपनी–अपनी ओर खींचते हैं)

fr ykÙkek% तुम दोनों का ही कहना ठीक हो सकता है, पर मेरा प्रण है कि मैं अद्वितीय शक्तिशाली पुरुष को ही वरण करूंगी। तुम दोनों मुझे अपनी–अपनी ओर खींचकर क्यों कष्ट दे रहे हो? क्या यही तुम्हारा शक्तिशालीनता

का परिचय है।

lqn% (क्रोध से) अरे उपसुंद! यह तू क्या कर रहा है। यह तेरी भाभी है।

milu% यह मेरी भाभी है या तुम्हारी बहू? हाथ, छोड़ दो।

lqn% (गरजकर) अरे कुलांगार! तेरा इतना साहस! जो तेरे लिए माता के समान पूज्य है उस मेरी पत्नी का तू मेरे ही सामने हरण करना चाहता है।

milu% (उसी प्रकार) रे दुष्ट! मेरा ही अपकार करके तू उलटा मुझी को दोष देता है? अच्छा, (तिलोत्तमा से) हे सुंदरी! तुम क्षण भर अपेक्षा करके स्वयं देख लो कि तुम्हारी इस वर माला का कौन अधिकारी है।

(युद्ध)

lqn% उपसुंद की सहायता के लिए विकराल और भयंकर जैसे पात्र आते हैं लेकिन वे दोनों के युद्ध को रोक नहीं पाते। दोनों मृत्यु को प्राप्त होते हैं। गुप्त जी बंधु–द्रोह के परिणाम को रेखांकित करते हैंः

fodjky% यह सब हम लोगों के फूटे भाग्य का ही दोष है।

lqn% नहीं, नहीं, इसमें भाग्य फूटने की कोई बात नहीं। यह केवल फूट का ही फल है। इसलिए तुमसे हमारा अंतिम अनुरोध यही है कि हमारे समाधि–मंदिरों की ऊँची–ऊँची पताकाओं पर, सबके पढ़े जाने योग्य बड़े–बड़े अक्षरों में लिखवा देना किः

सुंद और उपसुंद का है सब से अनुरोध।
सावधान, देखो, कभी उठे न बंधु–विरोध।।

नाटक के अंत में तिलोत्तमा की प्रशंसा इंद्र स्वयं करते हैंः–"(आदरपूर्वक) तिलोत्तमे, सचमुच तूने बड़ा काम किया.... " तिलोत्तमा मनुष्यता के प्रसार को, प्रेम की महिमा को स्पष्ट करती हुई गुप्त जी का संदेश प्रेक्षकों तक पहुंचाती है– "मैं कृतार्थ हुई। यह सब देवराज की ही कृपा है फिर भी यदि आप प्रसन्न हैं तो भरत का यह वाक्य पूरा होने दीजिएः– (गान)

बरसे प्रेम रूप पयोद, प्रबल ईर्ष्यानल बुझा दे विनयजल सविनोद.....

1916 में गुप्त जी का नाटक 'चन्द्रहास' प्रकाशित हुआ। पौराणिक कथा वस्तु पर आधारित इस नाटक में छह पुरुष पात्र तथा तीन स्त्री पात्र है। नाटक में पाँच अंक होते हैं और प्रत्येक अंक में पाँच–पाँच दृश्य। इस नाटक का घटना–स्थल है कुंतलपुर का राजगृह, निर्जन वन और मंदिर का मैदान। यह पौराणिक नाटक भाग्य के खेल और भक्ति–भाव की महिमा पर आधारित है। नाटक के प्रारंभ में नान्दी के अंतर्गत जो सवैया है, वह नाटक की भाव–भूमि को स्पष्ट करता है।

नाटक के प्रथम अंक का प्रथम दृश्य कुंतलपुर का है। कुंतलपुर का मंत्री धृष्टबुद्धि अपने द्वार पर गालव मुनि की प्रतीक्षा कर रहा है। ये दोनों चरित्र दो अलग–अलग प्रवृत्तियों को व्यक्त करते हैं। धृष्टबुद्धि की दृष्टि में व्रत और पर्व बेकार हैं। वे स्त्रियॉं की भीरुता के प्रतीक हैं। गालव ईश्वर के प्रति जितना अनुरक्त है, बचपन पर भी उसकी उतनी ही ममता है। वह एक अनाथ बालक चंद्रहास को अपने साथ लेकर धृष्टबुद्धि के द्वार पर जाता है। इन दोनों के बीच का जो संवाद है, वह अहंकार और धर्म के दो अलग–अलग छोरों को एक साथ प्रस्तुत करता हैः

ek"Vcf)% स्त्रियों के व्रत और पर्व के मारे मैं तो हैरान हो गया। नित्य दान, नित्य ब्राहमण–भोजन, कुछ ठिकाना है और जब तक द्विज देवता भोजन करके दक्षिणा न ले लें तब तक न खाना न पीना। मुझसे तो यह सब बखेड़ा नहीं होता।

इस नाटक में गुप्त जी ने नियति को भी एक पात्र बनाकर उपस्थित किया है। नियति के कारण अनाथ चंद्रहास सारी समृद्धियों को प्राप्त कर लेता है। स्वयं नियति का कथन हैः

fu;fr% वसंत तिलक जो पुष्प से मृत्यु तथा पवि से कठोर,
मैं हूं वही नियति सुंदर और घोर, है कौन जो कर सके.....

चंद्रहास इस नाटक का नायक है और पूरी कथा उसके आसपास घूमती है। वह पहले युवराज बनता है और उसके बाद शासक। उसका शासन धर्म पर आधारित है और वह प्रजा को खुश रखने में उसकी समृद्धि में ही अपने राजपथ की सिद्धि मानता है। वह स्पष्ट कहता है प्रजा के लिए ही राज्य का योग है। इस प्रकार यह नाटक प्रजा हित को केंद्र में रखकर लिखा गया है। पौराणिक कथा के माध्यम से गुप्त जी ने इस नाटक में युगीन व्यथा को प्रस्तुत किया है। इस नाटक में अनेक पात्र हैं– सज्जन पात्र है, तो खल पात्र भी हैं किंतु नाटक का उद्देश्य एक सुयोग्य शासक के रूप में चंद्रहास को महिमामंडित करना है।

मैथिलीशरण गुप्त के नाटकों में लीला का उल्लेख भी अपेक्षित है। वैसे गुप्तजी के एक जिल्द में प्रकाशित नाटकों में इसे स्थान नहीं मिला है और न हीं भूमिका लेखक डॉक्टर सत्य प्रकाश मिश्र ने इसका उल्लेख किया है। लीला गुप्त जी का गीतिनाट्य है। गुप्त जी ने 'अनघ' के रूप में अपना पहला गीतिनाट्य 1925 में ही लिख दिया था। इस नाटक का प्रकाशन सन् 1961 में साहित्य सदन चिरगांव द्वारा हुआ। 80 पृष्ठ के इस नाटक में नौ दृश्य हैं और घटना–स्थल हैं अयोध्या का राज भवन, आश्रम, जनकपुरी की स्वयंवर सभा और जंगल। सच पूछा जाए तो 'लीला' गुप्त जी का पहला गीतिनाट्य है। यह 1921 ई. में ही लिखा जा चुका था। लीला के प्रथम दृश्य में 16 पदों की वस्तु निर्देशात्मक नान्दी है। दूसरे दृश्य में वन भाग है जहां दशरथ के पुत्र अपने बाल सखाओं के साथ मृग्या की योजना बनाते हैं। तृतीय दृश्य में विश्वामित्र दशरथ से राम और लक्ष्मण को मांगते हैं। चतुर्थ दृश्य में वे उन दोनों को साथ लेकर जाते हैं। पंचम दृश्य में ताड़का वध होता है। षष्ठ दृश्य में जनकपुर के धनुष यज्ञ की सूचना मिलती है। सप्तम दृश्य में सीता उर्मिला से राम– लक्ष्मण का प्रथम साक्षात्कार होता है और आठवें दृश्य में धनुष भंग करने के लिए राजाओं की बैचैनी दिखाई गई है। नवम दृश्य में धनुष भंग, परशुराम–लक्ष्मण संवाद और सीता–विवाह की योजना की गई है। पौराणिक नाटक होने के बावजूद लीला गुप्त जी की भक्ति–भावना की ही नहीं राष्ट्रीय भावना को भी अभिव्यक्त करती है।

1925 ई. में गुप्त जी का 'अनघ' नाटक लिखा गया लेकिन यह प्रकाशित हुआ 1937 ई में। 136 पृष्ठ के इस नाटक में पुरुष पात्र बारह हैं और स्त्री पात्र मुख्य रूप से एक ही है। 'अनघ' के प्रारंभ में गुप्त जी का यह मंगलाचरण है:

'राम–कृष्ण ने जहां आप अवतार लिया है, आ आकर बहु बार दूर भू–भार किया है।'

नाटक का प्रारंभ अरण्य से होता है जहां नाटक का मुख्य पात्र मघ इस गान के साथ उपस्थित होता है:

'विषम विश्व का कोना है; मेरा जहाँ बिछोना है.....'

मन से साधारण जन मिलते हैं। चोरों की मुलाकात होती है। मघ मुखिया से भी मिलता है और अपने घर आकर अपनी माँ के दर्शन भी करता है। मघ और माँ का संवाद गुप्त जी की गृहस्थ भावना के अनुकूल है:

e?k% 'आह! क्षमा कर अम्ब, मुझे; हुआ विशेष विलंब मुझे।
मेरे बिना न खाने का– हठ क्यों कष्ट उठाने का?'

मघ इस नाटक में मातृत्व को महिमामंडित करता है और लुटेरों को मनुष्य बनाता है। इस गीतिनाट्य के अंतिम दृश्यों में जनसेवा विरोधी दुर्जन मुखिया मघ को बंदी बनाता है किंतु उसकी मुक्ति होती है और राजा–रानी मघ की शक्ति को पहचानकर उसका अभिवादन करते हैं। नाटक का अंत इस प्रकार होता है:

jk t k% क्षमा करो हे भ्रद, तुम्हें अति कष्ट हुआ है,
पर मेरा भ्रम आज यहाँ सुस्पष्ट हुआ है।
(मघ का बंधन खोलना)

e?k% देव! परम सौभाग्य आज इस जन सेवी का; दर्शन मुझको मिला इसी मिष इस देवी का३..

मैथिलीशरण गुप्त के दो अप्रकाशित नाटकों 'निष्क्रिय प्रतिरोध' और 'विसर्जन' को उनके नाटकों के संग्रह में

सम्मिलित किया गया है। 'निष्क्रिय प्रतिरोध' दक्षिण अफ्रीका में कुलियों पर किए गए अमानुषिक अत्याचार और महात्मा गांधी के नेतृत्व में इसका प्रतिरोध करने वाले भारतीय मजदूरों की कथा पर आधारित है। नाटक का पहला दृश्य दक्षिण अफ्रीका के शहर जोहान्सबर्ग पर केंद्रित है। रामकृष्ण बार–बार हिंदुओं की तेजस्विता को चुनौती देता है और कहता है, "अब हम वे हिंदू नहीं है जो आँख दिखाने वालों की आँख निकाल लें। रामकृष्ण एक स्थान पर अपनी जाति की हीन और निर्वीर्य्य अवस्था को देखकर कहता है कि हम लोगों जैसी निस्तेज और मृतक जाति और हम लोगों जैसा स्वार्थी कोई नहीं है। उसके बार–बार उद्‌बोधन का एक निश्चित उद्देश्य है और वह उद्देश्य है संघर्षबद्ध होकर इस प्रकार के अपमान का प्रतिकार। उसके इस प्रकार के वचनों का अंततः एक लाभ तो होता ही है कि दो हजार से अधिक मजदूरों का अफ्रीका का पहला ऐतिहासिक मार्च महात्मा गांधी के नेतृत्व में प्रारंभ होता है और गोरी चमड़ी वाले अंग्रेजों को झुकना पड़ता है। रामकृष्ण की यह वाणी मैथिलीशरण गुप्त की अनेक रचनाओं की ही नहीं हिंदू पुनर्जागरण की भी वाणी है। रामकृष्ण का कथन भारत भारती के कथन की ही प्रतिध्वनि हैः

"यदि हम हिंदू होते, होता धरा पै कौन व्यक्ति,
जो यों दिखाता हमको स्वशक्ति...."

पूरे नाटक में महात्मा गांधी नहीं हैं उनके प्रभाव, नेतृत्व और क्षमता का उल्लेख है।

नाटक का प्रारंभ भारतेंदु की भारत–दुर्दशा की तरह होता है। अंतर सिर्फ इतना है कि शुरुआत भारत में नहीं होती, बल्कि दक्षिण अफ्रीका के शहर जोहान्सबर्ग में होती है। प्रारंभ इस प्रकार हैः

jke–".k% (प्रवेश करके पथ पर चलता हुआ) हाय! क्या अब हम भारतवासी पशुओं से भी गये बीते हो गए हैं। क्या अब हमें मनुष्य कहलाने का भी अधिकार नहीं रहा। यदि यह बात न होती तो भी क्या हमें यहां रहने के लिए– केवल रहने के लिए भी ठौर न मिल सकता.....

आठ दृश्यों के इस नाटक के अंत में अपने देश की मुक्ति के लिए एक संकल्प है। महात्मा गाँधी के उद्‌बोधन ने समस्त भारतवासियों को उत्प्रेरित कर दिया हैः

हम सब हैं सत्याग्रही, रखेंगे हम मान देश का बन ध्रुव निश्चय धारी..... देशवासी जागते तो है किंतु उनका प्रतिरोध निष्क्रिय ही रहता है।

'विसर्जन' गुप्त जी का अप्रकाशित नाटक है, जिसे संग्रह में प्रकाशित किया गया है। इस नाटक में तैंतीस पात्र हैं। यह नाटक बेगार प्रथा के खिलाफ है और महात्मा गांधी के 'हृदय परिवर्तन' पर आधारित है, परंतु अपने मूल स्वरूप और वर्णन की दृष्टि से बेगार प्रथा और शोषण के खिलाफ लिखा हुआ सशक्त नाटक है। नाटक के साथ में दृश्य में सामान्य स्त्री–पुरुष बुंदेलखंडी में बात करते हैं, नाटकों में बोली का प्रयोग सरलता और शिक्षा दोनों दृष्टि से संभवतः पहली बार किया गया है। सेठ हरदीन की हवेली में बेगार पकड़ा हुआ रामदीन कहता है कि गरीबों को क्यों दुख देते हो। सेठ साहूकार हाकिम हुक्काम भूखे थोड़े ही हैं जो गरीबों के मुँह की रोटी खींचकर उनके सामने डालते हो।" इस प्रकार के अनेक वाक्य इस नाटक में नाटककार की हमदर्दी को व्यक्त करते हैं।

विश्वंभरनाथ का राष्ट्रीय शिक्षा के लिए प्रयत्न आंदोलन की तैयारी की पहली भूमिका जी की राजनीतिक सूझ–बूझ का प्रमाण है। रामदीन को हरदीन द्वारा झूठे आरोप में फंसना, जेल भिजवाना, उसकी बेटी की हत्या, स्त्री की मृत्यु और अंततः बदले की भावना से डाकुओं के दल में शामिल होना, हरदीन को पकड़ना और मारने को तैयार होना, विश्वंभर द्वारा उसका बचाया जाना, विश्वंभर के उपदेश से डाकुओं का हृदय परिवर्तन आदि घटनाओं के माध्यम से गुप्त जी ने अन्याय और अत्याचार का गांधीवादी हल प्रस्तुत किया है। यह उनकी दृष्टि का प्रमाण है। बेगार प्रथा का उत्तर नहीं है, परंतु गांधी जी का यही उत्तर था। नाटक का नाम डाकुओं के द्वारा डाकजनी के विसर्जन के आधार पर रखा गया है न कि समर्पण के आधार पर। राष्ट्रीय प्रश्नों का उत्तर खोजने के प्रयत्न में ही यह लिखा गया है।

fu"d"k

इस प्रकार गुप्त जी के नाटक शिल्प से अधिक कथ्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। युग बोध की गहरी छाप इनके नाटकों में प्रतिबिंबित होता है। अपनी प्रसिद्धि के बावजूद पाठकों से सीधा संवाद है गुप्त जी के नाटकों में। मानवीय संवेदना, राष्ट्रीय बोध, शोषण के खिलाफ गोलबंद, जातीय भावना, समाज सुधार, राष्ट्रीय शिक्षा, समस्याओं के गांधीवादी समाधान आदि प्रासंगिक विषय गुप्त जी के नाटकों में चित्रित हुए हैं। अपने विचारों को, अपनी बातों को जन–जन तक पहुंचाने के लिए एक सशक्त विधा के रूप में गुप्त जी ने नाट्य लेखन किया है न कि नाटक विधा को मजबूत करने के लिए। बावजूद इसके नाट्य लेखन परंपरा में गुप्त जी के अवदान रेखांकनीय है।

lanHk lwph

1. *सरस्वती,* जनवरी, 1905 ई.।
2. नगेन्द्र, *मैथिलीशरण गुप्त काव्य संदर्भ कोश,* पृ 9।
3. *मैथिलीशरण गुप्त के नाटक*।

****